भारतीय समाज में परम्परा एवं आधुनिकता : एक समाजशास्त्रीय मूल्यांकन

सबीहा खान– शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत
Email - khansabeeha234@gmail.com

सारांश : भारतीय समाज में परिवर्तन वास्तव में बड़े पैमाने पर हो रहा है लेकिन बड़े पैमाने पर हो रहे इस परिवर्तन परिवर्तन की दिशा क्या है? इस परिवर्तन को आधुनिकरण का नाम दिया गया है क्योंकि आधुनिकीकरण सामाजिक सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। भारत जैसे परम्परागत समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के सम्बन्ध में सम्बन्ध में समाजशास्त्रीय एवं मानवशास्त्रीय विद्वानों के मध्य असमंजसता एवं अस्पष्टता बानी हुई है। सामाजिक सामाजिक परिवर्तन के रेखीय सिद्धांत के अंतर्गत परम्परा एवं आधुनिकता को बड़े स्तर पर ध्रुवीय (युग्म) के रूप में रूप में माना गया है। **जोसफ आर गुस्फील्ड** (१९६७) का मानना है कि परम्परागत समाज को स्थायी, मुल्यात्मक रूप रूप से एक सा और संरचनात्मक रूप से समरूप मानना सही नही है, यह आवश्यक नही की परम्परा एवं के मध्य सम्बन्ध क लिए उसमे विस्थापन, संघर्ष और विशिष्टता शामिल हो। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक तथ्य सामग्री तथ्य सामग्री के माध्यम से परम्परा एवं आधुनिकता की प्रकिया के फलस्वरूप समकालीन भारत में स्थिरता एवं निरंतरता का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन किया गया है।

शब्द कुंजी : परम्परा, आधुनिकता, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण.

प्रस्तावना :

मानव सभ्यता का सम्पूर्ण इतिहास परम्परा से आधुनिकीकरण की दिशा में होने वाले परिवर्तन का इतिहास रहा है। संसार के अनेक विकसित देश जहाँ अपनी परम्पराओ को छोड़ कर आधुनिकीकरण की दिशा में काफी आगे बढ़ गए, वहीँ भारतीय समाज में आज भी परम्परा और आधुनिकता का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है। एक ओर अधिकांश भारतीयो का जीवन कर्म और पुनर्जन्म सम्बन्धी विश्वासो, परलोक की अवधारणा, पवित्रतावादी विचारो तथा जाति के नियमो जैसी परम्पराओ से प्रभावित है, वहीँ दूसरी ओर प्रद्यौगिक विकास, नगरीकरण, लोकतान्त्रिक मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता तथा तर्कपूर्ण व्यवहारों का भी प्रभाव तेजी से बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान समाज परिवर्तन के एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसमे अनेक ऐसी व्यवस्थाओ, सामाजिक मूल्यों और व्यवहारों के तरीको को प्रोत्साहन मिलने लगा है जो उनकी परम्परागत विशेषताओ से काफी भिन्न है। इसी कारण परिवर्तन की प्रकृति को समझने के लिए अधिकांश समाजशास्त्री अब परम्परा के साथ साथ आधुनिकीकरण को विशेष महत्व देने लगे है। आधुनिकीकरण परिवर्तन का एक विशेष प्रारूप है जो सामाजिक संरचना, मूल्य-उन्मेष, प्रेरणा तथा कुछ विशेष प्रतिमानों से सम्बंधित होता है। **डेनियल लर्नर** (१९५८) के अनुसार- जब समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा लोकतान्त्रिक पर आधारित नगरीयता में वृद्धि, संचार के साधनो में वृद्धि तथा शिक्षा का प्रसार, आर्थिक और राजनितिक जन सहभाग में वृद्धि, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि, धर्मनिरपेक्ष और तर्कपूर्ण विचारो में वृद्धि जैसी विशेषताए परिलक्षित होने लगती है तब यह कहा जा सकता है की वह समाज परम्परा से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है। लेकिन **एम. एन. श्रीनिवास** (१९६६) लर्नर की आधुनिकीकरण की अवधारणा की आलोचना करते हुए कहते है कि यह एक मूल्यपरक शब्द है। इनके अनुसार- आधुनिकीकरण केवल इस अर्थ में प्रयुक्त होता है की यह अच्छा है। इसलिए श्रीनिवास पश्चिमीकरण शब्द का प्रयोग करना ज्यादा पसंद करते है। यह शब्द उन परिवर्तनो का द्योतक है जो तकनीक, संस्थाओं, विचारो और मूल्यों के स्तर पर आया। अपनी अवधारणा को विकसित करते हुए वे कहते है कि पश्चिमीकरण न केवल नई संस्थाओं को जन्म देता है बल्कि पुरानी संस्थाओ में मौलिक परिवर्तन भी लाता है।

संरक्षण प्राप्त होने के बावजूद भी परम्परा और आधुनिकता जैसे प्रतिमानित विषय के अध्ययन में हमने इसके विपरीत यह यह पाया कि आधुनिकता का सम्बन्ध सारभौमिकता एवं वचनबद्धता से है जिसमे पवित्र एवं अलौकिक भावना का स्थान, सत्य सत्य की उपयोगिता, गणना(तर्क) एवं विज्ञान ने ले लिया है, समाज की प्राथमिक इकाईयो एवं समूहों की अपेक्षा वैयक्तिकता वैयक्तिकता का महत्व बढ़ा है। राजनीति के अन्तर्गत संगठन में व्यक्ति के जीवन और कार्य का आधार जन्म की अपेक्षा

अपेक्षा इच्छा पर आधारित है। और जिसमे भाग्यवादिता का स्थान मानव निर्मित भौतिक पर्यावरण ने ले लिया है, व्यक्ति की व्यक्ति की पहचान अर्जित है न की प्रदत्त, जहा प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत परिवार, निवास और समुदाय का कार्य भिन्न कार्य भिन्न है। (**रुडोल्फ एवं रुडोल्फ**ः १९६७)

परम्परा बनाम आधुनिकताः

सामान्य तौर पर आधुनिकता एवं परम्परा को एक दूसरे का विरोधी अथवा एक युग्म के रूप में स्वीकार किया गया है। **रुडोल्फ एवं रुडोल्फ** (१९६७) का कहना है की वर्तमान सामाजिक और राजनितिक परिवर्तनों क विश्लेषण में आधुनिकता का प्रयोग सामान्यतया परम्परा के विरोधी के रूप में किया गया है। भारत में परम्परा एवं आधुनिकता विरोधाभास के रूप में मौजूद है। हमने विकास की योजनाये बनायीं है और यह पाया है कि परम्पराये उनमे बाधक सिद्ध हुई है। धर्मनिरपेक्षता के मार्ग में पवित्रता और अपवित्रता की प्राचीन धारणा बाधक रही है। विवेक के विकास में धर्म और धार्मिक संस्कार तथा कर्मकांड बाधक है, प्रदत्त व अर्जित पदों का तालमेल नहीं बैठ पाया है परम्परा प्रदत्त पदों को चाहती है तो आधुनिकता अर्जित पदों की पुष्टी करती है आज का भारत परम्परा और आधुनिकता की दुविधा में फंस गया है, उसके सामने एक द्वन्द है कि वह किस सीमा तक परम्परा को छोड़े एवं किस सीमा तक आधुनिकता को अपनाए। (**श्याम चरण दुबे**ः १९७४) इनके अनुसार भारतीय गांव आज भी परम्परा और आधुनिकता के दो ध्रुवो के बीच सहमा खड़ा है।

आधुनिक समाज में परम्पराः

परम्परागत समाज वर्तमान आधुनिकतम समाजो का, सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं शैक्षणिक सभी क्षेत्रो में अनुकरण कर रहे है, परंतु इसका यह अर्थ नही की परम्परागत समाज आधुनिकता से एकदम भिन्न है और परम्परात्मक ही है तथा आधुनिक समाज में परम्पराओ का कोई महत्व नहीं **है। मिल्टन सिंगर** (१९७१) का यह कथन महत्वपूर्ण है कि परम्परा तथा आधुनिकता दो ऐसे प्रतिमान है जिनमे से किसी का भी विशुद्ध रूप किसी समाज में देखने को नही मिलता। ऐसे विचार **प्रोफेसर शिल्स** (१९६१) के भी है उन्होंने लिखा है- परम्परा और आधुनिकता के बीच कोई गहरी खायी नही है .....कोई समाज न तो पूरी तरह से परम्परागत है और न ही आधुनिक, आधुनिक समाज अपनी प्रकृति से पूरी तरह एवं खुली प्रकृति के होते है। ये परम्परा व आधुनिकता को एक सातत्य के रूप में देखते है।

परम्परा और आधुनिकता के तत्व प्रत्येक समाज में साथ साथ विद्यमान रहते है यहाँ तक की विकसित समाजो एवं परम्परागत समाज जिनकी मुख्य विशेषता स्थिरता है उनमे भी परिवर्तन, गतिशीलता और प्रद्यौगिकी विकास के कुछ न कुछ लक्षण अवश्य पाये जाते है।

किसी भी आधुनिकता का निर्माण परम्परा के कंधो व अनुभवो पर ही होता है। इस नाते वह भूत एवं वर्तमान के बीच एक कड़ी है। इस सन्दर्भ में **मैक्किम मैरियट** (१९५५) ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन्होंने उत्तर भारत के एक गावँ में किये शोधकार्य क जरिये होने वाले सामाजिक परिवर्तन को वृहद् एवं लघु परम्परा क अंतर्गत सार्वभौमीकरण एव सँकुचीकरण दो अवधारणाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। इसीप्रकार **एलेक्स इंकल्स एवं डेविड स्मिथ** (१९६९) द्वारा विकासशील देशो में अध्ययन कर यह ज्ञात करने की कोशिश की कि एक व्यक्ति के लिए आधुनिकता का कितना महत्व है और वो किस हद तक पारंपरिकता से आधुनिकता की ओर गतिमान हो रहा है। आधुनिक समाज पूर्णतः आधुनिक नही है। विज्ञान की तरह ही आधुनिकीकरण भी खुले उद्देश्य वाली प्रक्रिया है इसकी प्रकृति उद्विकासीय है जो स्वतः परिवर्तित होती और आगे बढ़ती रहती है अतः कोई भी समाज यह दावा नहीं कर सकता कि उसका पूरी तरह से आधुनिकीकरण हो गया है या वह पूरी तरह से आधुनिक है क्योंकि किसी भी समाज में आधुनिकीकरण में चाहे कितनी वृद्धि हो जाए, व्यक्तियो के व्यवहार किसी न किसी रूप में उनकी परम्पराओ से अवश्य प्रभावित रहते है इसका प्रमुख उदाहरण एकाकी परिवार है। इस तरह भारत के ग्रामीण एवं नगरीय सभी क्षेत्रो में परम्परा और आधुनिकता की यह निरंतरता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है

निष्कर्ष:

भारत में परम्परा से आधुनिकता की ओर होने वाले परिवर्तन से कुछ लोग यह समझने लगते है कि आधुनिकीकरण में यदि इसी तरह वृद्धि होती रही तो कुछ समय बाद हमारे समाज की भौतिक विशेषताये समाप्त हो जाएँगी, जबकि ऐसा नही है। वास्तविकता यह है की कोई भी समाज चाहे कितना भी आधुनिक क्यों ना हो जाये वहाँ किसी न किसी रूप में परम्पराओ का प्रभाव सदैव बना रहता है। परम्परा के अंदर आधुनिकरण के और आधुनिकीकरण के अंदर परम्परा के तत्व हमेशा छिपे रहते है। उदाहरण के लिए पहले व्यक्तियो का व्यवहार परिवार व रीतिरिवाज से प्रभावित होता था मगर आज इसमें लचीलापन आ गया है। आज संरचनात्मक रूप से संयुक्त परिवार नाभिकीय परिवार में बदल रहे है लेकिन भावनात्मक रूप से लोग उसके बावजूद भी संयुक्त परिवार के विछिन्न भाग से जुड़े होते है, रोजगार या अन्य कारणों से परिवार से अलग अलग रहते है फिर भी परिवार से जुड़े बड़े निर्णय साथ में मिलकर करते है जैसे- विभिन्न उत्सव एवं समारोह। इसी प्रकार आधुनिकरण के फलस्वरूप जाति सम्बन्धी निषेध आज सार्वजनिक स्तर पर कम हो गए है किन्तु निजी स्तर पर आज भी लोग निम्न जातियो के साथ खान-पान एवं विवाह जैसे सम्बन्ध रखना घृणा की दृस्टि से देखते है। वर्तमान में ऑनर किलिंग इसका विकृत उदाहरण है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री **डी. पी. मुखर्जी** (१९५८) का कहना है की भारतीय परम्परा के पश्चिम के संपर्क में आने के कारण सांस्कृतिक विरोधाभासों की शक्तियां मुखरित हुई है। इसने भारत में एक ऐसे मध्यवर्ग को जन्म दिया है जिसकी जड़े न तो परम्परा में है न ही आधुनिकता में। अतः भारतीय समाज अब खुला न रहते हुए बंद समाज भी नही रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. गुस्फील्ड जोसफ आर : मिस्प्लेस्ड पोलारिटीज़ इन द स्टडी ऑफ़ सोशल चेंज, अमेरिकन जर्नल ऑफ़ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम-७२, नंबर-४६, पप-३५१-३६२ १. (१९६७).

२. रुडोल्फ, लियोड आई एंड सुसैन एच रुडोल्फः द मॉडर्निटी ऑफ़ ट्रेडिशन पोलिटिकल डेवेलपमेंट इन इंडिया, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, (१९६७).

३. एम एन श्रीनिवास : सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, प.५०. (१९६६).

४. सिंगर मिल्टन : बियॉन्ड ट्रेडिशन एंड मॉडर्निटी इन मद्रासः कम्पेरेटिव स्टडीज इन सोसाइटी एंड हिस्ट्री, १३(२). (१९७१).

५. शिल्स, एडवर्ड : द इंटेलेक्चुअल बिटवीन ट्रेडिशन एंड मॉडर्निटीः द इंडियन सिचुएशन, शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस. (१९६१).

६. एस सी दूबे : एक्सप्लेनेशन एंड मैनेजमेंट ऑफ़ चेंजेस, मकग्राव हिल कम्पनीज, पप.६७-६८, (१९७४).

७. योगेंद्र सिंहः मॉडर्नाइजेशन ऑफ़ इंडियन ट्रेडिशन, नई दिल्ली थॉमसन, (१९७३).

८. डी. पी. मुखर्जी : डायवर्सिटीज़, नई दिल्ली पीपल्स पब्लिशिंग हॉउस, (१९५८).